रवीन्द्रनाथ ठाकुर और श्यामा प्रसाद मुखर्जी

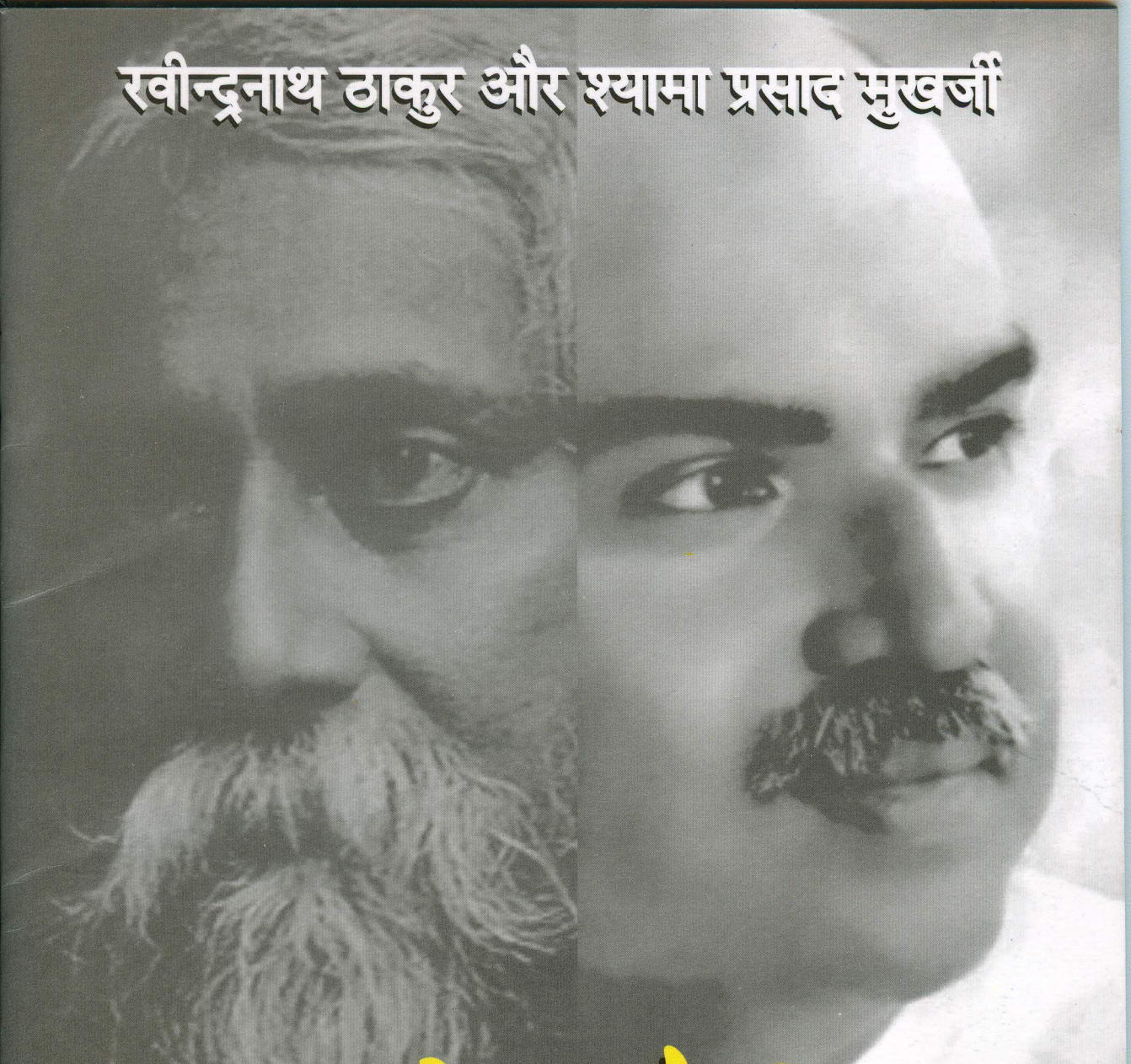

अमेय मैत्री

डा. दिनेश चंद्र सिन्हा

कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 150वीं जयंती के अवसर पर
डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान का प्रकाशन

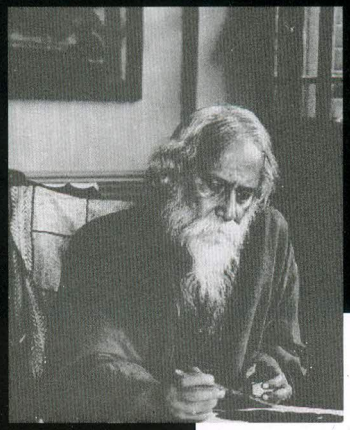

प्रिय श्यामा प्रसाद,

आप जानते हैं कि मेरे जीवन की एक बहुत बड़ी इच्छा यह है कि हमारी भाषा विश्वविद्यालय में शिक्षा के माध्यम के रूप में दृढ़ता पूर्वक और अंतिम रूप से स्थापित हो जाए। आपके पिता ने इस आंदोलन की शुरूआत की थी, और संभवतः इस महत् कार्य को सम्पादित करने की जिम्मेवारी अब आप पर आएगी। अगर आप मुझे अर्थात एक बाहरी व्यक्ति को दीक्षांत समारोह को संबोधित करने के लिए आमंत्रित कर एक परंपरा को तोड़ रहे हैं, तो आपको मुझे दीक्षांत समारोह को बंगाली भाषा में संबोधित करने की अनुमति देकर एक दूसरी परंपरा को तोड़ने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। अगर विश्वविद्यालय इसके लिए तैयार हो जाता है तो मैं इस जिम्मेवारी का वहन करने के लिए सहर्ष तैयार हूं, यद्यपि मुझे शारीरिक रूप से कुछ कष्ट उठाना होगा।

आपका स्नेही,

(हस्ता.) रवीन्द्रनाथ ठाकुर,

14 सितम्बर, 1936

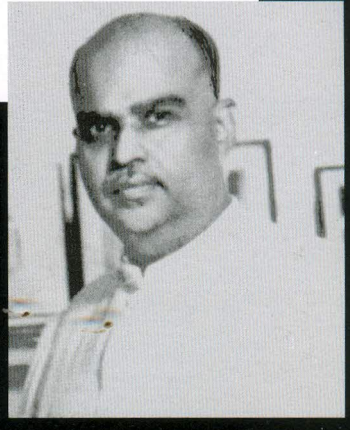

रवीन्द्रनाथ ठाकुर और श्यामा प्रसाद मुखर्जी

अमेय मैत्री

डा. दिनेश चंद्र सिन्हा

संपादक
तरूण विजय

डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

संपादक :
तरूण विजय
संपादन सहयोग एवं प्रस्तुतिः
अमरजीत सिंह
अनुवादकः
विमल कुमार सिंह
आवरणः
गौतम वल्लूरी
प्रकाशक :
डा. हर्षवर्धन, सचिव, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान
11– अशोक रोड, नई दिल्ली – 110001
मुद्रक :
जॉफरी एण्ड बेल पब्लिशर्स प्रिंटर्स
बी–30, लक्ष्मी नगर दिल्ली – 92
प्रकाशन वर्ष : 2012
मूल्य : ₹ 30/–

नितिन गडकरी
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी

संदेश

कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर भारतीय आत्मा की वाणी थे। उनका साहित्य राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत था। विश्व में अकेले उनको ही यह अन्यतम सम्मान प्राप्त है कि उनके लिखे गीत दो देशों के राष्ट्रगान के नाते जनमान्य हुए। विश्व का शायद ही कोई ऐसा कोना होगा जहां कविगुरु के शब्द और वाणी से प्रेरित पीढ़ियां सृजन तथा मानवीय चेतना के क्षेत्र में सक्रिय न हों। उन्हें उस समय नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था जब भारत परतंत्र था और विश्व में भारत की छवि एक गरीब और पिछड़े हुए देश के नाते उभारी जाती थी। उन्हें ब्रिटिश सरकार ने 'सर' की उपाधि से भी अलंकृत किया था। परंतु उन्होंने वह सम्मान जलियांवाला बाग कांड के विरोध में लौटा दिया।

कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर का डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के परिवार से घनिष्ठ मैत्रीपूर्ण संबंध था। विशेषकर डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के पिता श्री आशुतोष मुखर्जी के प्रति कविगुरु के मन में गहरा सम्मान था। कोलकाता विश्वविद्यालय को विज्ञान, साहित्य, कला एवं बंगला भाषा के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानजनक स्थान दिलाने में श्री आशुतोष मुखर्जी और डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जो साधना की उसके प्रति कविगुरु बहुत आनंद अनुभव करते थे और डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के निमंत्रण पर वे कोलकाता विश्वविद्यालय में व्याख्यान हेतु भी आए।

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान द्वारा कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के मध्य हुए एक महत्वपूर्ण पत्राचार को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित कर कविगुरु की 150वीं जयंती के उत्सव में एक सार्थक योगदान दिया जा रहा है। मैं संस्थान को इस प्रस्तुति के लिए बधाई देता हूं और मुझे विश्वास है कि यह कृति विद्वान पाठकों द्वारा सराही जाएगी।

धन्यवाद ।

आपका

(नितिन गडकरी)

प्रति :
श्री तरूण विजय
सांसद (राज्य सभा)
मानद् निदेशक, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन
नई दिल्ली ।

| दिल्ली | भाजपा केन्द्रीय कार्यालय 11, अशोक रोड, नई दिल्ली–110001. फोन : +91–11–23005700, फैक्स : +91–11–23005787
| मुम्बई | 1201–ए, बारहवीं मंजिल, सुखदा को–ऑप. हाऊ. सो., सर पोखरानवाला मार्ग, वरली मुम्बई–400030, टेलीफैक्स : +91–22–24970287, 24971892
| नागपुर | गडकरी वाडा, उपाध्याय रोड, महाल, नागपुर 440002. टेलीफैक्स : 91–712–2727127, 272 7145

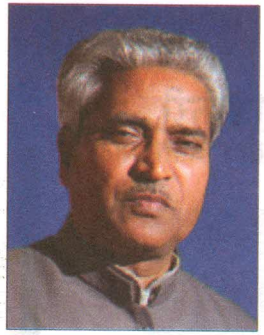

प्रस्तावना

कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर भारतीय जिजीविषा और राष्ट्रीय अस्मिता के श्रेष्ठ प्रतीक माने जाते हैं। उनकी 150वीं जयन्ती न केवल भारत में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में सोत्साह मनायी जा रही है। उनकी रचनाओं नें वैश्विक मन को प्रेरित और स्पंदित किया है। संभवतः विश्व के वे अकेले ऐसे महान कवि हैं जिनकी रचनाओं को दो देशों का राष्ट्रगीत होने का गौरव प्राप्त हुआ है। कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर के श्री आशुतोष मुखर्जी एवं उनके परिवार के साथ घनिष्ठ संबंध रहे थे। इसीलिए डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर को आग्रहपूर्वक कोलकाता विश्वविद्यालय में बंगला भाषा में व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया था, जिसे कविगुरु ने अस्वस्थ होते हुए भी स्वीकार किया।

राष्ट्रीयता के प्रतीक इन दो महापुरुषों के आत्मीय संबंधों पर डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध संस्थान के मानद् निदेशक श्री तरुण विजय के मार्गदर्शन में सुप्रसिद्ध बंगला विद्वान श्री दिनेशचन्द्र सिन्हा का यह प्रबंध प्रकाशित करते हुए हमें हार्दिक आनंद और संतोष का अनुभव हो रहा है। विश्वास है कि कविगुरु की 150 वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में प्रकाशित होने वाली इस कृति का योगदान पाठकों द्वारा सराहा जाएगा

रामलाल
राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन), भारतीय जनता पार्टी
न्यासी, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान

अपनी बात

भारतीय ऋषि परम्परा में कविगुरु रवीन्द्र नाथ ठाकुर का स्थान अनन्य है। वे भारतीयता के श्रेष्ठ प्रतिनिधि और वैदिक ऋषियों की वैश्विक दृष्टि के अद्‌भुत संवाहक थे। भारत की संस्कृति, सभ्यता और विरासत की परम्परा को उन्होंने आत्मसात कर शांति निकेतन की स्थापना की जो आज भी विश्व में भारतीयता की सुगंध लिए हुए एक विशिष्ट विश्वविद्यालय के रूप में भारत का गौरववर्द्धन कर रहा है। जहां अन्य सभी विश्वविद्यालय लैटिन और ग्रीक अकादमिक परम्पराओं का अनुसरण करते हुए अबूझे, चोगे और टोपियों वाले वस्त्रालंकरणों के साथ दीक्षांत समारोह सम्पन्न कर रहे हैं वहीं कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर की महान और श्रेष्ठ भारतीय निष्ठा के कारण शांतिनिकेतन शुद्ध भारतीय गुरुकुल परंपरा में संस्कारित उपाधियों का वितरण एवं उसी पद्धति से दीक्षांत समारोह का भी आयोजन करता है।

वे भारत को विश्व में महानतम और श्रेष्ठतम राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। उनकी ईश्वर से भी यही प्रार्थना होती थी कि –हे प्रभु, भारत को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में उदित करो जहां हम गर्व से निर्भीकतापूर्वक सर ऊंचाकर चल सकें। भारतीय जन–जन के हृदय और मन को आंदोलित करने वाला उनका अद्‌भुत गीत–"जन–गण–मन अधिनायक जय हे" सबसे पहले कांग्रेस अधिवेशन में गया गया था। उनकी कहानियां, गीत और व्याख्यान भारत की अनमोल विरासत हैं।

डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के पिता श्री आशुतोष मुखर्जी और उनके परिवार से कविगुरु की काफी आत्मीयता थी। इसलिए स्वाभाविक ही है कि कविगुरु के 150वें जन्मवर्ष के अवसर पर उनके प्रति हार्दिक वंदनांजलि प्रस्तुत करते हुए कविगुरु और डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के मध्य हुए एक रोचक और महत्वपूर्ण पत्र–व्यवहार को हम पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित कर सुधी पाठक जगत के समक्ष एक शब्द–पुष्प अर्पित करें।

आशा है इस कृति से पाठक वर्ग लाभान्वित होगा। इसकी प्रस्तुति में डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान के शोधपत्रकार श्री अमरजीत सिंह के परिश्रम को साधुवाद। अधिष्ठान की पश्चिम बंगाल इकाई के प्रमुख सहयोगी एवं वरिष्ठ अग्रणी श्रीमती महुआधर और श्री अरिन्दम मुखर्जी के हम हार्दिक आभारी हैं। इसकी प्रस्तुति में सुश्री सुप्रिया बैद के योगदान हेतु आभार। वरिष्ठ इतिहासकार एवं डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के प्रसिद्ध जीवनीकार डा. दिनेशचन्द्र सिन्हा ने जिस मनोयोग और श्रद्धा से यह सामग्री संजोयी तथा अधिष्ठान को प्रकाशनार्थ सौंपी, उसके लिए हम उनके हार्दिक कृतज्ञ हैं।

तरुण विजय
मानद निदेशक
डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान